

Court No. - 51

Case :- CRIMINAL MISC. APPLICATION U/S 372 CR.P.C
(LEAVE TO APPEAL) No. - 252 of 2018

Applicant :- Mira Devi

Opposite Party :- State Of U.P. And 4 Others

Counsel for Applicant :- Afzal Ahmad Khan Durrani

Counsel for Opposite Party :- G.A.

Hon'ble Vipin Sinha,J.

Hon'ble Ifaqt Ali Khan,J.

Heard Sri Afzal Ahmad Khan Durrani, learned counsel for the applicant on the application seeking leave to appeal against the judgment and order dated 30.3.2018 by means of which all the accused persons have been acquitted for the offence punishable under sections 394/34, 302/34, 201, 120B and 411 IPC in Sessions Trial No. 74 of 2001 and under section 25/5/35 Arms Act in Session Trial No. 76 of 2001.

It has also been informed that initially there was one more accused, namely, Smt. Phoolmati, however, it appears that she has expired during the pendency of the trial itself.

Learned counsel for the applicant has strongly pressed the application with the contention that there is a recovery of items (silver ornaments) at the pointing out of the accused respondents and there is also a recovery of a body at the instance of the accused respondents.

Keeping in view the aforesaid contentions of the learned counsel for the applicant in mind, the Court has gone through the judgment of the concerned court and the findings as recorded therein. The record itself shows at the very first instance that the cause of death is injury no. 1 and with regard to injury no. 1, it has been mentioned "*chot no. 1 mrityu karit karne ke liye paryapt hona tatha mritak ki mrityu gala dabane par dam ghutne ke karan hona bataya hai aur sujhav dene par ukt sakshi ne yah bhi kaha hai ki mritak ko kisi lathi dande ki tarah ki kisi wastu dwara dabane par chot no. 1 aana sambhav hai.*

It has not been disputed that no recovery of Danda has

been made out from the accused respondents.

The further contention is with regard to recovery of the silver items and the record shows that the recovery has been made by the person who was accompanying the first informant when they were out for searching the deceased. In this regard the statement of PW4 becomes important. He clearly says *“mere saath ram badal, tilak, jagatdhari, hiralal pappu is tarah kafi log the dundh rahe the. Baag mein jo makan bana tha makan ke bagal mein latrin tank thi jo sukha tha uske upar dhakkan type ka rakha hua tha uske upar raakhi wa pairaa phenka hua tha jab hum log latrin tank ke upar cross kiye to uska dhakkan dagmagaya usko shak hone par hataya gaya to dekha gaya tank mein bore mein bartan wagairah mila usi ke andar mritak ki cycle bhi mili.”* Thus, it is apparent that the recovery, if any, is not at the pointing out of the accused-respondents. The court further finds that there is no motive on the part of the accused-respondents to commit the crime. It has come on record that the goods which were recovered was of the value of Rs.5000/- only and thus the court has very safely presumed that nobody would commit murder for an amount of Rs.5000/- in which five persons would be involved. Necessary reference in this regard may be made to paragraph no. 33 of the judgment which is extracted herein below:

“अब पत्रावली पर उपलब्ध तथ्यों व साक्ष्यों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जाना है कि क्या हत्या कि पीछे कोई प्रबल हेतुक उपलब्ध है? क्या मृतक को उक्त अभियुक्तगण के साथ जीवित अवस्था में उसकी मृत्यु के निकट पूर्व किसी साक्षी द्वारा देखा गया है? यह भी निष्कर्ष निकाला जाना है कि अभियोजन द्वारा जो परिस्थितियां बतायी गयी हैं, क्या उन सभी परिस्थितियों के समग्र मूल्यांकन से मात्र यही निष्कर्ष निकलता है कि अपराध अभियुक्तगण द्वारा ही किया गया है और उक्त परिस्थितियों किसी दूसरी सम्भावना की ओर इंगित नहीं करती हैं?”

It is admitted position on record that there is no direct evidence against the accused-respondents which may show their active participation in the alleged crime, even there is no last seen evidence on record, a fact which has not been disputed by the learned counsel for the applicant. There is nothing on record which may show active participation of the

accused-respondents in the actual commission of the crime. The court with regard to issue of motive has further observed as under:

“उल्लेखनीय है कि मृतक की लाश और उक्त कथित तीन बोरा सामान मृतक के पिता व अन्य गांव से आये व्यक्तियों द्वारा खोजने से घटनास्थल से बरामद हुआ है। अभियुक्तगण की निशानदेही से न तो शव बरामद हुआ और न ही कथित लूट का सामान। यह भी उल्लेखनीय है कि घटना दिनांक 05.02.2001 से लगभग एक माह के पश्चात् दिनांक 07.03.2001 को अभियुक्तगण ओम प्रकाश एवं बहोरी पासी की निशानदेही पर मृतक की साइकिल, उसके जले हुए कपड़े की राख व एक अदद चांदी की अंगूठी अभियुक्त राम बहोरी व कुछ जेवर अभियुक्त ओम प्रकाश के कब्जे से बरामद होना कहा गया है। उक्त कथित बरामदगी की फर्द क्रमशः प्रदर्श क-7, प्रदर्श क-8 व प्रदर्श क-9 हैं। उक्त प्रदर्शों के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि बरामदगी के समय वादी जगतधारी एवं दो अन्य व्यक्ति रामबदल व मुन्ना कौशल की उपस्थिति दिखायी गयी है और उक्त तीनों साक्षीगण के हस्ताक्षर फर्द बरामदगी पर मौजूद हैं। किन्तु उल्लेखनीय है कि न्यायालय के समक्ष रामबदल व मुन्ना कौशल को साक्ष्य हेतु पेश नहीं किया गया है और वादी साक्षी पी0डब्लू0-1 जगतधारी ने उक्त कथित बरामदगी अपने सामने होने का अपने साक्ष्य में कोई भी कथन नहीं किया है, जिससे सर्वप्रथम तो उक्त बरामदगी ही संदेहयुक्त हो जाती है।

सुपुर्दगीनामा में जिस सामान की लिस्ट है, उस सम्पूर्ण लिस्ट में सामानों की कीमत भी अंकित की गयी है, जो कि पांच हजार रुपये से भी कम है। उक्त कथित लूट के सामान की यह कीमत इतनी नहीं है, कि इतने रूपयों के लिए तीन अभियुक्त एक व्यक्ति की हत्या कर दें और ऐसी हत्या में उनके घर की दो महिलायें भी शामिल रहें। यह भी उल्लेखनीय है कि यदि अभियुक्तगण का मृतक की हत्या करके सामान लूटना ही हेतुक होता तो अभियुक्तगण के पास घटना और शव बरामद होने के मध्य एक पूरे दिन व दो पूरी रातों का समय था। वे लोग उक्त कथित लूट का सामान व शव को किसी दूसरी जगह स्थानान्तरित कर सकते थे और उन्हें घटनास्थल पर हत्या व लूट का प्रत्येक निशान मिटा देने का पूरा अवसर था, किन्तु अभियुक्तगण द्वारा ऐसा नहीं किया गया और घटनास्थल पर ही मृतक की लाश व सामान बरामद हुआ। यह भी उल्लेखनीय है कि घटनास्थल डॉ0 दीवान के बाग का क्षेत्रफल काफी बड़ा है। अतः इस सम्भावना से भी इंकार नहीं किया जा सकता कि मृतक की हत्या अन्यत्र किसी अन्य वजह से की गयी हो और उसका सामान व शव बाग में छिपा दिया गया हो। इस प्रकार उपरोक्त विवेचन से हत्या के पीछे जो मोटिव होना कहा गया है, वह इतना पर्याप्त नहीं है, जिसके लिए पांच लोग मिलकर किसी की हत्या करें और उसके शव व सामान को दूर छिपाने के बजाए अपने रहने के स्थान के पास ही छिपा दें।”

Reference may also be made to another observation made by the court below with regard to testimony of PW1 which is to the following effect:

“साक्षी पी0डब्लू0-1 जगतधारी ने अपने साक्ष्य में कहीं भी यह नहीं कहा है कि उक्त सामान उसके सामने अभियुक्तगण की निशानदेही पर घटनास्थल डॉ0 दीवान की बाग से बताये हुए स्थान से बरामद हुआ हो। इसके अतिरिक्त उक्त कथित बरामदगी के साक्षीगण रामबदल व मुन्ना कौशल को अभियोजन की ओर से न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत ही नहीं

किया गया है। ऐसी स्थिति में अभियुक्तगण के कब्जे से उक्त बरामदगी विधिक रूप से साबित नहीं मानी जा सकती है।”

The court below has concluded thus:

“अतः उपरोक्त समस्त विवेचन एवं परिस्थितिजन्य तथ्यों के विश्लेषण के आधार पर मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचता हूँ कि इस मामले में अभियोजन हत्या व लूट के पीछे कोई प्रबल हेतुक साबित करने में विफल रहा है। इस परिस्थितिजन्य साक्ष्य के मामले में मृतक को जीवित अवस्था में अभियुक्तगण के साथ देखे जाने का कोई साक्ष्य विद्यमान नहीं है। इसके अतिरिक्त ऐसा कोई परिस्थितिजन्य साक्ष्य नहीं है, जिसके आधार पर इस हत्या व लूट के मामले को इस प्रकार से साबित किया गया हो कि प्रत्येक कड़ी को समग्र रूप से देखने पर यह साबित होता हो कि हत्या व लूट का अपराध अभियुक्तगण के द्वारा ही किया गया हो तथा ऐसी कोई परिस्थिति भी साबित नहीं की गयी जिससे कि इस बात की सम्भावना से इंकार किया जा सकता हो कि उक्त हत्या व लूट का अपराध किन्हीं अन्य परिस्थितियों में होना सम्भावित न हो। धारा-27 भारतीय साक्ष्य अधिनियम के अन्तर्गत अभियुक्तगण की निशानदेही पर की गयी कथित बरामदगी कट्टा कारतूस व उन्हें बनाने के उपकरण आदि की बरामदगी भी अभियुक्तगण के कब्जे से विधिवत् साबित नहीं हुई है। अतः अभियोजन अभियुक्तगण के विरुद्ध अपना मामला युक्ति-युक्त संदेह से साबित करने में विफल रहा है। फलस्वरूप अभियुक्तगण उक्त लगाये गये आरोपों से, संदेह का लाभ प्राप्त करते हुए, दोषमुक्त होने योग्य हैं।”

It is one of the established principles of law that a witness may lie but not the circumstances. However, the court must adopt a cautious approach while basing its conviction purely on circumstantial evidence. The standard of proof required to convict a person on circumstantial evidence is well established by a series of decisions of Supreme Court.

According to that standard the circumstances relied upon in support of the conviction must be fully established and the chain of evidence furnished by those circumstances must be so far complete as not to leave any reasonable ground for a conclusion consistent with the innocence of the accused and further it must be such as to show that within all human probability the act must have been done by the accused.

There is this basic rule of criminal jurisprudence that if two views are possible on the evidence adduced in a case of circumstantial evidence, one pointing to the guilt of the accused and the other to his innocence, the court should adopt view which is favorable to the accused.

In reference to cases where there is no direct evidence and the decision has to rest on circumstantial evidence, the

Supreme Court in a line of decisions has consistently held that such evidence must satisfied the following tests:-

(a) the circumstances from which an inference of guilt is sought to be drawn, must be cogently and firmly established;

(b) those circumstances should be of a definite tendency unerringly pointing towards guilt of the accused;

(c) the circumstances, taken cumulatively should form a chain so complete that there is no escape from the conclusion that within all human probability the crime was committed by the accused and none else; and

(d) the circumstantial evidence in order to sustain conviction must be complete and incapable of explanation on any other hypothesis than that of the guilt of the accused and such evidence should not only be consistent with the guilt of the accused but should be inconsistent with his innocence."

Reference, may also be made to the judgment of the Apex Court rendered in the case of **Sharad Birdhichand Sarda v. State of Maharashtra** reported in **AIR 1984 SC 1622**.

Thus, in view of aforesaid consistent legal position as elaborated above and also in view of the fact that learned counsel for the applicant has failed to point out any illegality or perversity with the findings so recorded in the impugned order, no case for interference has been made out.

It is an established position of law that if the court below has taken a view which is a possible view in a reasonable manner, then the same shall not be interfered with.

After perusal of the impugned judgment shows that the trial court after a thorough marshalling of the facts of the case and a microscopic scrutiny of the evidence on record has held that the prosecution has failed to prove the charge against the accused respondents and the findings recorded by the learned trial judge in the impugned judgment are based upon evidence and supported by cogent reasons.

No interference with the impugned judgment and order of acquittal is warranted. Accordingly leave to appeal is refused and application is **rejected**. Consequently, the appeal also stands dismissed.

Copy of the order be certified to the court concerned for consequential follow up action.

Order Date :- 4.7.2018

Kuldeep